SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. SESSION – 2020 - 22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – The Idea of Creative Learning

DATE - 03/07/2021

सृजनशीलता (Creativity)

अर्थ :-

सृजनशीलता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्युतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग सोचने, विचार करने तथा कार्य करने में सक्षम बनाती है। अतः प्रचलित ढंग से हटकर किसी नये ढंग से चिन्तन-मनन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनशीलता कही जाती है।

परिभाषा :-

ड्रेवहल के शब्दों में, — "सृजनशीलता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार :- सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की एक मानसिक प्रक्रिया है।"

सृजनशीलता के तत्व
(Elements of Creativity)

सृजनशीलता के प्रमुख चार तत्व होते है जिन्हे निम्नवत् ढंग से व्यक्त किया जा सकता है —

1) प्रवाह (Fluency) :- प्रवाह से तात्पर्य किसी दिये गये समस्या पर अधिकाधिक विचारों या अनुक्रियाओं को प्रस्तुत करने से है। प्रवाह को पुनः चार भागों में बाँटा जा सकता है।

(i) वैचारिक प्रवाह (Ideational Fluency) :-
इसमें विचारों के स्वतंत्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है।
जैसे :- किसी कहानी के अनेकाअनेक वैकल्पिक बनाना, किसी वस्तु के अनेकाअनेक उपयोग बताना, किसी वस्तु को सुधारने के अनेकाअनेक तरीके बताना आदि आदि।

(ii) अभिव्यक्ति प्रवाह (Expressional Fluency) :-
अभिव्यक्ति प्रवाह में मानवीय अभिव्यक्तियों के स्वतंत्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है,
जैसे- दिये गये चार शब्दों से वाक्य बनाना, दिये गये अर्थ पूर्ण वाक्य को पूरा करना आदि।

(iii) साहचर्य प्रवाह (Associative Fluency) :-
साहचर्य प्रवाह से तात्पर्य दिये गये शब्दों या वस्तुओं में परस्पर साहचर्य स्थापित करने से है।
जैसे - किसी दिये गये शब्द के अधिकाधिक पर्यायवाची या विलोम शब्द लिखना आदि।

(iv) शब्द प्रवाह (Word Fluency) :-
शब्द प्रवाह का सम्बन्ध शब्दों से होता है।
जैसे - दिये गये प्रत्ययों तथा उपसर्गों से शब्दों को बनाना आदि।

किसी व्यक्ति के द्वारा किसी सृजनशील परीक्षण के किसी पद पर प्रवाह को प्रायः उस पद पर दिये गये प्रत्युत्तरों की संख्या से व्यक्त किया जाता है। परीक्षण पर व्यक्ति के कुल प्रवाह प्राप्तांक 2019 को ज्ञात करने के लिए सभी पदों के प्रवाह

अपसारी

अभिसारी

3.

अंकों का योग कर लिया जाता है।

(2) विविधता (Flexibility):-
विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विविधता के होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्प या प्रत्युत्तर एक दूसरे से कितने भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं।

(3) मौलिकता (Originality):- मौलिकता मुख्य रूप से नवीनता से सम्बन्धित होती है। व्यक्ति के अन्यों से भिन्न विकल्पों को मौलिक विकल्प कहा जा सकता है। जैसे - वस्तुओं के नये उपयोग बताना, कहानी, कविता या लेख के शीर्षक लिखना, परिवर्तनों के दूरगामी परिणाम बताना, नवीन प्रतीक खोजना आदि।

4. विस्तारण (Elaboration):- विस्तारण से तात्पर्य दिये गये विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या या व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतिकरण से होता है।

विस्तारण को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(i) शाब्दिक विस्तारण :- इसमें दी गयी संक्षिप्त घटना, क्रिया, कार्य, परिस्थिति आदि को विस्तृत करके प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है।

(ii) आकृति विस्तारण :- इसमें किसी दी गई रेखा या अपूर्ण चित्र में कुछ जोड़ कर उससे एक पूर्ण एवं सार्थक चित्र बनाना होता है।

सृजनशीलता की विशेषताएं

सृजनशील व्यक्तियों में परिलक्षित होने वाली कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. विचारों तथा अभिव्यक्ति में मौलिकता
2. स्वतंत्र निर्णय क्षमता
3. उच्च अकांक्षा
4. गैर-परम्परागत विचारों में रूचि (अपरम्परावादी)
5. अभिव्यक्ति में प्रवाह
6. विस्तार क्षमता
7. जोखिम (Risk) उठाने में तत्पर
8. अभिव्यक्ति में विविधता
9. बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं।
10. सृजनशील बालकों में विचित्र प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती हैं।
11. यह बालक दृढ़ निश्चयी होते हैं।

MAY 2019
M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31

08 APRIL MONDAY
098-267 • WK 15

5.

सृजनशील बालकों की पहचान

(Identification of Creative Children)

शैक्षिक दृष्टि से सृजनशील बालकों को पहचानना तथा उनकी सृजनशील अभिव्यक्ति की सही दिशा देने के साथ-2 उसके सर्वोत्तम विकास का मार्ग प्रशस्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिकों ने सृजनशील का अध्ययन कर के सृजनशील बालकों को पहचानने के लिए कुछ विशेषताओं को ज्ञात करने के प्रयास किये हैं। जो निम्नलिखित है—

1. अव्यवस्था को स्वीकारना
2. कठिन कार्यों को करना
3. सदैव परेशान रहना
4. रहस्यात्मक खोजों के प्रति आकर्षित होना
5. अंपू और लज्जालू
6. श्रेष्ठ बनने की इच्छा
7. असन्तुष्ट
8. उत्साही
9. दोष निकालने वाला
10. वात्सल्य
11. आत्म-सचेत
12. चिन्तन में स्वतंत्रता (विचार)
13. निर्णय में स्वतंत्रता
14. विचित्र आदतें
15. अपने विचारों में लीन
16. डरपोक
17. हँसमुख
18. निश्छल (छल-कपट रहित)

2019

अपसारी
अभिसारी

सृजनात्मकता की प्रकृति

1. सृजनात्मकता अर्जित एवं जन्मजात होती है।
2. इसमें बुद्धि का सामान्य स्तर होना आवश्यक है।
3. सृजनात्मकता में अपसारी चिन्तन होता है।
4. सृजनात्मकता में रचनात्मकता का तत्व होता है।
5. सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है।

7.

सृजनशील बालकों की शिक्षा

(Education for Creative Students)

सृजनशीलता का शिक्षा में विशेष महत्व है। शिक्षा के द्वारा बालकों की सृजनशील शक्तियों का विकास किया जा सकता है जिनके द्वारा व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकता है। सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अनेक सुझाव दिये हैं जिनमें से कुछ प्रमुख सुझाव निम्नवत् हैं—

1. अध्यापकगण साहित्य, विज्ञान, कला आदि विभिन्न क्षेत्रों में तरह-तरह के सृजनशील कार्य प्रस्तुत करके अपने छात्रों की सृजनशील अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने में समर्थ होने चाहिए।

2. अध्यापकों को चाहिए कि वे छात्रों को अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करें, उनमें स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना विकसित करें तथा उन्हें सृजनशील कार्यों के अधिकाधिक अवसर प्रदान करें जिससे उनमें आत्म-विश्वास ~~विकसित~~ हो सके।

3. अध्यापकों के द्वारा कक्षा तथा विद्यालय में ऐसा वातावरण उपस्थित किया जाना चाहिए जो छात्रों की क्रियाशीलता के साथ-साथ उनके उत्पादक चिन्तन, विविधता, मौलिकता तथा नम्यता को प्रोत्साहित करने वाला हो।

4. सृजनशीलता के विकास के लिए यह आवश्यक है कि सृजनशील कार्यों में बालकों के उत्साह व रुचि को बनाए रखा जाए।

APRIL
THURSDAY
11
WK 15 • 101-264

APRIL 2019

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29	30												

5. छात्रों में नवीन विचारों का ग्रहण करने, उनका सम्मान करने तथा प्रतिक्रिया करने की स्वतन्त्रता विकसित की जानी चाहिए।

6. छात्रों में मौलिकता तथा विविधता की प्रवृत्ति को बढ़ाने को अधिकाधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।